पाठ 7.3 : अखबार में नाम

यशपाल

*हिंदी के यशस्वी कथाकार और उपन्यासकार **यशपाल** का जन्म 03 दिसम्बर सन् 1903 को फिरोजपुर छावनी (पंजाब) में हुआ था। वे स्वतंत्रता आन्दोलन के सिपाही भी थे। शहीद भगतसिंह और सुखदेव के संपर्क में आने के बाद क्रांतिकारी आन्दोलन की ओर आकृष्ट हुए थे। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान वे कई बार जेल भी गए। उन्होंने **विप्लव** नाम की एक पत्रिका निकाली। उनकी अनेक रचनाओं का दुनिया की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है। यशपाल की प्रमुख कृतियाँ **दादा कामरेड, दिव्या, झूठासच** (उपन्यास) **ज्ञानदान, धर्मयुद्ध, तर्क का तूफान** (कहानी संग्रह) तथा **न्याय का संघर्ष, बात–बात में बात, देखा सोचा समझा** (निबंध संग्रह) हैं। उनका निधन 26 दिसम्बर सन् 1976 को हुआ।*

जून का महीना था, दोपहर का समय और धूप कड़ी थी। ड्रिल–मास्टर साहब ड्रिल करा रहे थे।

मास्टर साहब ने लड़कों को एक लाइन में खड़े होकर डबल मार्च करने का आर्डर दिया। लड़कों की लाइन ने मैदान का एक चक्कर पूरा कर दूसरा आरंभ किया था कि अनंतराम गिर पड़ा।

मास्टर साहब ने पुकारा, 'हाल्ट!'

लड़के लाइन से बिखर गए।

मास्टर साहब और दो लड़कों ने मिलकर अनंत को उठाया और बरामदे में ले गए। मास्टर साहब ने एक लड़के को दौड़कर पानी लाने का हुक्म दिया। दो–तीन लड़के स्कूल की कापियाँ लेकर अनंत को हवा करने लगे। अनंत के मुँह पर पानी के छींटे मारे गए। उसे होश आते–आते हेडमास्टर साहब भी आ गए और अनंतराम के सिर पर हाथ फेरकर, पुचकारकर उन्होंने उसे तसल्ली दी।

स्कूल का चपरासी एक ताँगा ले आया। दो लड़कों के साथ ड्रिल मास्टर अनंतराम को उसके घर पहुँचाने गए। स्कूल–भर में अनंतराम के बेहोश हो जाने की खबर फैल गई। स्कूल में सब उसे जान गए।

लड़कों के धूप में दौड़ते समय गुरदास लाइन में अनंतराम से दो लड़कों के बाद था। यह घटना और कांड हो जाने के बाद वह सोचता रहा, 'अगर अनंतराम की जगह वही बेहोश होकर गिर पड़ता, वैसे ही उसे चोट आ जाती तो कितना अच्छा होता?' आह भरकर उसने सोचा, 'सब लोग उसे जान जाते और उसकी खातिर होती।'

श्रेणी में भी गुरदास की कुछ ऐसी ही हालत थी। गणित के मास्टर साहब सवाल लिखाकर बेंचों के बीच में घूमते हुए नजर डालते रहते थे कि कोई लड़का नकल या कोई दूसरी बेजा हरकत तो नहीं कर रहा। लड़कों

के मन में यह होड़ चल रही होती कि सबसे पहले सवाल पूरा करके कौन खड़ा हो जाता है।

गुरदास बड़े यत्न से अपना मस्तिष्क कॉपी में गड़ा देता। उँगलियों पर गुणा और योग करके उत्तर तक पहुँच ही रहा होता कि बनवारी सवाल पूरा करके खड़ा हो जाता। गुरदास का उत्साह भंग हो जाता और दो–तीन पल की देर यों भी हो जाती। कभी–कभी सबसे पहले सवाल कर सकने की उलझन के कारण कहीं भूल भी हो जाती। मास्टर साहब शाबाशी देते तो बनवारी और खन्ना को और डाँटते तो खलीक और महेश का ही नाम लेकर। महेश और खलीक न केवल कभी सवाल पूरा करने की चिंता करते, बल्कि उसके लिए लज्जित भी न होते।

नाम जब कभी लिया जाता तो बनवारी, खन्ना, खलीक और महेश का ही, गुरदास बेचारे का कभी नहीं। ऐसी ही हालत व्याकरण और अंग्रेजी की क्लास में भी होती। कुछ लड़के पढ़ाई–लिखाई में बहुत तेज होने की प्रशंसा पाते और कोई डाँट–डपट के प्रति निर्द्वंद्व होने के कारण बेंच पर खड़े कर दिए जाने से लोगों की नजर में चढ़कर नाम कमा लेते। गुरदास बेचारा दोनों तरफ से बीच में रह जाता।

इतिहास में गुरदास की विशेष रुचि थी। शेरशाह सूरी और खिलजी की चढ़ाइयों और अकबर के शासन के वर्णन उसके मस्तिष्क में सचित्र होकर चक्कर काटते रहते, वैसे ही शिवाजी के अनेक किले जीतने के वर्णन भी। वह अपनी कल्पना में अपने–आपको शिवाजी की तरह ऊँची, नोंकदार पगड़ी पहने, छोटी दाढ़ी रखे और वैसा ही चोगा पहने, तलवार लिए सेना के आगे घोड़े पर सरपट दौड़ता चला जाता देखता।

इतिहास को यों मनस्थ कर लेने या इतिहास में स्वयं समा जाने पर भी गुरदास को इन महत्त्वपूर्ण घटनाओं की तारीखें और सन् याद न रहते थे क्योंकि गुरदास के काल्पनिक ऐतिहासिक चित्रों में तारीखों और सनों का कोई स्थान न था। परिणाम यह होता कि इतिहास की क्लास में भी गुरदास को शाबाशी मिलने या उसके नाम पुकारे जाने का समय न आता।

सबके सामने अपना नाम पुकारा जाता सुनने की गुरदास की महत्वाकांक्षा उसके छोटे–से हृदय में इतिहास के अतीत के बोझ के नीचे दबकर सिसकती रह जाती। तिस पर इतिहास के मास्टर साहब का प्रायः कहते रहना कि दुनिया में लाखों लोग मरते जाते हैं परंतु जीवन वास्तव में उन्हीं लोगों का होता है, जो मरकर भी अपना नाम जिंदा छोड़ जाते हैं, गुरदास के सिसकते हृदय को एक और चोट पहुँचा देता।

गुरदास अपने माता–पिता की संतानों में तीन बहनों का अकेला भाई था। उसकी माँ उसे राजा बेटा कहकर पुकारती थी। स्वयं पिता रेलवे के दफ्तर में साधारण क्लर्की करते थे। कभी कह देते कि उनका पुत्र ही उनका और अपना नाम कर जाएगा। ख्याति और नाम की कमाई के लिए इस प्रकार निरंतर दी जाती रहने वाली उत्तेजनाओं के बावजूद गुरदास श्रेणी और समाज में अपने–आप को किसी अनाज की बोरी के करोड़ों एक ही से दानों में से एक साधारण दाने से अधिक अनुभव न कर पाता था।

ऐसा दाना कि बोरी को उठाते समय वह गिर जाए, तो कोई ध्यान नहीं देता। ऐसे समय उसकी नित्य कुचली जाती महत्त्वाकांक्षा चीख उठती कि बोरी के छेद से सड़क पर उसके गिर जाने की घटना ही ऐसी क्यों न हो जाए कि दुनिया जान ले कि वह वास्तव में कितना बड़ा आदमी है और उसका नाम मोटे अक्षरों में अखबारों

में छप जाए। गुरदास कल्पना करने लगता कि वह मर गया है परंतु अखबारों में मोटे अक्षरों में छपे अपने नाम को देखकर, मृत्यु के प्रति विद्रूप से मुस्करा रहा है, मृत्यु उसे समाप्त न कर सकी।

आयु बढ़ने के साथ–साथ गुरदास की नाम कमाने की महत्वाकाँक्षा उग्र होती जा रही थी, परंतु उस स्वप्न की पूर्ति की आशा उतनी ही दूर भागती जान पड़ रही थी। बहुत बड़ी–बड़ी कल्पनाओं के बावजूद वह अपने पिता पर कृपा–दृष्टि रखनेवाले एक बड़े साहब की कृपा से दफ्तर में केवल क्लर्क ही बन पाया।

जिन दिनों गुरदास अपने मन को समझाकर यह संतोष दे रहा था कि उसके मुहल्ले के हजार से अधिक लोगों में से किसी का भी तो नाम कभी अखबार में नहीं छपा, तभी उसके मुहल्ले के एक निःसन्तान लाला ने अपनी आयु भर का संचित गुप्तधन प्रकट करके अपने नाम से एक स्कूल स्थापित करने की घोषणा कर दी।

लालाजी का अखबार में केवल नाम ही प्रशंसा–सहित नहीं छपा, उनका चित्र भी छपा। गुरदास आह भरकर रह गया। साथ ही अखबार में नाम छपवाकर, नाम कमाने की आशा बुझती हुई चिनगारियों पर राख की एक और तह पड़ गई। गुरदास ने मन को समझाया कि इतना धन और यश तो केवल पूर्वजन्म के कर्मों के फल से ही पाया जा सकता है। इस जन्म में तो ऐसे अवसर और साधन की कोई आशा उस जैसों के लिए हो ही नहीं सकती थी।

उस साल वसंत के आरंभ में शहर में प्लेग फूट निकला था। दुर्भाग्य से गुरदास के गरीब मुहल्ले में गलियाँ कच्ची और तंग होने के कारण, बीमारी का पहला शिकार, उसी मुहल्ले में दुलारे नाम का व्यक्ति हुआ।

मुहल्ले की गली के मुहाने पर रहमान साहब का मकान था। रहमान साहब ने आत्मरक्षा और मुहल्ले की रक्षा के विचार से छूत की बीमारी के हस्पताल को फोन करके एम्बुलेंस गाड़ी मँगवा दी। बहुत लोग इकट्ठे हो गए। दुलारे को स्ट्रेचर पर उठाकर मोटर पर रखा गया और हस्पताल पहुँचा दिया गया। म्युनिसिपैलिटी ने उसके घर की बहुत जोर से सफाई की। मुहल्ले के हर घर में दुलारे की चर्चा होती रही।

गुरदास संध्या समय थका–माँदा और झुँझलाया हुआ दफ्तर से लौट रहा था। भीड़ में से अखबारवाले ने पुकारा, 'आज शाम का ताजा अखबार। नाहर मुहल्ले में प्लेग फूट निकला। आज की खबरें पढ़िए।'

अखबार में अपने मुहल्ले का नाम छपने की बात से गुरदास सिहर उठा। उसका मस्तिष्क चमक गया। ओह, दुलारे की खबर छपी होगी। अखबार प्रायः वह नहीं खरीदता था, परंतु अपने मुहल्ले की खबर छपी होने के कारण उसने चार पैसे खर्च कर अखबार ले लिया। सचमुच दुलारे की खबर पहले पृष्ठ पर ही थी। लिखा था, 'बीमारी की रोकथाम के लिए सावधान।' और फिर दुलारे का नाम और उसकी खबर ही नहीं, स्ट्रेचर पर लेटे हुए, घबराहट में मुँह खोले हुए दुलारे की तस्वीर भी थी।

गुरदास ने पढ़ा कि बीमारी का इलाज देर से आरम्भ होने के कारण दुलारे की अवस्था चिंताजनक है। पढ़कर दुख हुआ। फिर ख्याल आया इस आदमी का नाम अखबार में छप जाने की क्या आशा थी? पर छप ही गया।

अपना–अपना भाग्य है, एक गहरी साँस लेकर गुरदास ने सोचा। दुलारे की अवस्था चिंताजनक होने की बात से दुख भी हुआ। फिर ख्याल आया देखो, मरते–मरते नाम कर ही गया। मरते तो सभी हैं पर यह बीमारी की मौत फिर भी अच्छी! ख्याल आया, कहीं बीमारी मुझे भी न हो जाए। भय तो लगा पर यह भी ख्याल आया कि नाम तो जिसका छपना था, छप गया। अब सबका नाम थोड़े ही छप सकता है।

खैर, दुलारे अगर बच न पाया तो अखबार में नाम छप जाने का फायदा उसे क्या हुआ? मजा तो तब है कि बेचारा बच जाए और अपनी तस्वीर वाले अखबार को अपनी कोठरी में लटका ले!

गुरदास को होश आया तो उसने सुना, 'इधर से संभालो! ऊपर से उठाओ!' कूल्हे में बहुत जोर से दरद हो रहा था। वह स्वयं उठ न पा रहा था। लोग उसे उठा रहे थे।

'हाय! हाय माँ!' उसकी चीखें निकली जा रही थी। लोगों ने उठा कर उसे एक मोटर में डाल दिया।

हस्पताल पहुँचकर उसे समझ में आया कि वह बाजार में एक मोटर के धक्के से गिर पड़ा था। मोटर के मालिक एक शरीफ वकील साहब थे। उस घटना के लिए बहुत दुख प्रकट कर रहे थे। एक बच्चे को बचाने के प्रयत्न में मोटर को दाईं तरफ जल्दी से मोड़ना पड़ा। उन्होंने बहुत जोर से हॉर्न भी बजाया और ब्रेक भी लगाया पर ये आदमी चलता–चलता अखबार पढ़ने में इतना मगन था कि उसने सुना ही नहीं।

गुरदास कूल्हे और घुटने के दरद के मारे कराह रहा था। कुछ सोचना समझना उसके बस की बात ही न थी।

डॉक्टर ने गुरदास को नींद आने की दवाई दे दी। वह भयंकर दरद से बचकर सो गया। रात में जब नींद टूटी तो दरद फिर होने लगा और साथ ही ख़्याल भी आया कि अब शायद अखबार में उसका नाम छप ही जाए। दरद में भी एक उत्साह–सा अनुभव हुआ और दरद भी कम लगने लगा। कल्पना में गुरदास को अखबार के पन्ने पर अपना नाम छपा दिखाई देने लगा।

सुबह जब हस्पताल की नर्स गुरदास के हाथ–मुँह धुलाकर उसका बिस्तर ठीक कर रही थी, मोटर के मालिक वकील साहब उसका हाल–चाल पूछने आ गए।

वकील साहब एक स्टूल खींचकर गुरदास के लोहे के पलंग के पास बैठ गए और समझाने लगे, 'देखो भाई, ड्राइवर बेचारे की कोई गलती नहीं थी। उसने तो इतने जोर से ब्रेक लगाया कि मोटर को भी नुकसान पहुँच गया। उस बेचारे को सजा भी हो जाएगी, तो तुम्हारा भला हो जाएगा? तुम्हारी चोट के लिए बहुत अफसोस है। हम तुम्हारे लिए दो–चार सौ रुपये का भी प्रबंध कर देंगे। कचहरी में तो मामला पेश होगा ही, जैसे हम कहें, तुम बयान दे देना। समझे!'

गुरदास वकील साहब की बात सुन रहा था, पर ध्यान उसका वकील साहब के हाथ में गोल–मोल लिपटे अखबार की ओर था। रह न सका तो पूछ बैठा, 'वकील साहब, अखबार में हमारा नाम छपा है? हमारा नाम गुरदास है। मकान नाहर मुहल्ले में है।'

वकील साहब की सहानुभूति में झुकी आँखें सहसा पूरी खुल गई, 'अखबार में नाम?' उन्होंने पूछा, 'चाहते हो? छपवा दें?'

'हाँ साहब, अखबार में तो जरूर छपना चाहिए।' आग्रह और विनय से गुरदास बोला।

'अच्छा, एक कागज पर नाम–पता लिख दो।' वकील साहब ने कलम और एक कागज गुरदास की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'अभी नहीं छपा तो कचहरी में मामला पेश होने के दिन छप जाएगा, ऐसी बात है।'

गुरदास को लँगड़ाते हुए ही कचहरी जाना पड़ा। वकील साहब की टेढ़ी जिरह का उत्तर देना सहज न था, आरंभ में ही उन्होंने पूछा– 'तुम अखबार में नाम छपवाना चाहते थे?'

'जी हाँ।' गुरदास को स्वीकार करना पड़ा।

'तुम्हें उम्मीद थी कि मोटर के नीचे दब जानेवाले आदमी का नाम अखबार में छप जाएगा?' वकील साहब ने फिर प्रश्न किया।

'जी हाँ!' गुरदास कुछ झिझका पर उसने स्वीकार कर लिया।

अगले दिन अखबार में छपा, 'मोटर दुर्घटना में आहत गुरदास को अदालत ने हर्जाना दिलाने से इनकार कर दिया। आहत के बयान से साबित हुआ कि अखबार में नाम छपाने के लिए ही वह जान–बूझकर मोटर के सामने आ गया था।

गुरदास ने अखबार से अपना मुँह ढाँप लिया, किसी को अपना मुँह कैसे दिखाता?

शब्दार्थ

यत्न – कोशिश; **निर्द्वंद्व** – दुविधाहीन, निश्चिंत; **मनस्थ** – मन में उपस्थित; **विद्रूप** – विकृत, बिगड़ा हुआ; **हर्जाना** – क्षतिपूर्ति; **बयान** – कथन; **आहत** – घायल।

अभ्यास

पाठ से

1. अनंतराम के बेहोश हो जाने के बाद गुरदास ने क्या सोचा और क्यों?
2. गुरदास की क्या महत्वाकांक्षा थी?
3. गुरदास के पिता की उससे क्या अपेक्षा थी?
4. गुरदास अपनी तुलना बोरी के एक दाने से क्यों करता था?
5. गुरदास अखबार में नाम छपवाने के लिए क्यों उतावला था?
6. अखबार में देखकर अपने मुहल्ले के लोगों का नाम उस पर क्या प्रतिक्रिया होती थी?
7. अदालत ने गुरदास को हर्जाना दिलाने से क्यों इंकार किया?

पाठ से आगे

1. किसी दिन का एक हिंदी अखबार लीजिए और एक पृष्ठ देखकर बताइए कि उसमें किस–किस के नाम छपे हैं? और किस बारे में उनके नामों की चर्चा हुई है?
2. अपने आस–पास के व्यक्तियों के अच्छे कार्यों को जानिए और उनके कार्यों के बारे में लिखिए।

3. 'ये आदमी चलता–चलता अखबार पढ़ने में इतना मगन था कि उसने सुना ही नहीं।' इस वाक्य में गुरदास के अखबार पढ़ने में मगन होने की बात कही गई है! आप किस–किस काम में मगन होते हैं? लिखिए।
4. ''अखबार में अपने नाम छपने की लालसा लिए विचार मग्न गुरुदास सड़क पर चलते हुए मोटर की ठोकर से दुर्घटनाग्रस्त हो गया।''

   गुरुदास द्वारा सड़क पर चलते हुए विचार में खो जाना कहाँ तक उचित था ? सतर्क उत्तर दीजिए।

भाषा के बारे में

1. अनन्त को अनंत, सम्बन्ध को संबंध, चञ्चल को चंचल की तरह भी लिखा जा सकता है। शब्द को संक्षिप्त कर लगाया गया बिंदु अनुस्वार कहलाता है। दिए गए उदाहरण के आधार पर आप भी पाठ में आए कुछ शब्दों को विस्तारित व संक्षिप्त कर लिखिए। यह भी बताइए कि अनुस्वार लगे शब्दों को विस्तारित करने के नियम क्या हैं?

2. पूर्ति, प्रारूप, पर्व, प्रखर, क्लर्क, राष्ट्र शब्दों में 'र' के भिन्न–भिन्न स्वरूप हैं।

पूर्ति – प + ऊ + [र्] + त + इ

प्रारूप – प् + [र + आ] + र + ऊ + प्

राष्ट्र – र + आ + ष् + ट् + [र]

पर्व – प् + अ + [र्] + व

क्लर्क – क् + ल् + अ + [र्] + क

प्रखर – प् + [र] + ख् + अ + र

(जहाँ 'र्' के साथ स्वर है वहाँ 'र' पूरा है जहाँ स्वर नहीं है वहाँ 'र्' आधा है।)

इसी तरह भिन्न रूप में प्रयुक्त 'र' वाले शब्दों की सूची बनाइए और इनकी प्रकृति को समझिए।

3. इन वाक्यों को पढ़िए–

(क) राम सेब ही खाता है।

(ख) राम सेब भी खाता है।

दोनों वाक्यों में दो शब्द 'भी' और 'ही' आगे आने वाले शब्दों में अर्थ को बदल रहे हैं। पहले वाक्य के संदर्भ में कहा जा सकता है कि राम केवल सेब खाता है, कोई अन्य फल नहीं। यहाँ 'ही' का प्रयोग 'एकमात्र' का अर्थ देता है और वाक्य में विशेष बल देता है।

दूसरे वाक्य में 'भी' में समावेशन का प्रभाव है कि राम सेब के साथ–साथ अन्य फल भी खा सकता है।

इसी तरह से आप 'ही' व 'भी' का प्रयोग करते हुए पाँच–पाँच वाक्य बनाइए।

योग्यता विस्तार

1. अपने गाँव, मुहल्ले या कस्बे में घटी किसी घटना को एक खबर के तौर पर लिखिए।

DHGNI2

2. कहानीकार 'यशपाल' की जीवनी अन्य स्रोतों से पढ़कर लिखिए।
3. समूह में चर्चा कीजिए कि सड़क पर चलते हुए हमें किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।